अध्याय–पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

5.0.0 प्रस्तावना –

प्रथम अध्याय में शोधकर्त्ता ने बताया है कि शिक्षा वृद्धि की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति को उसकी रूचि, शक्ति एवं योग्यता की स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। शैक्षिक उद्देश्य इस रूप में शिक्षक की मदद करता है कि वह अपनी अभी की गतिविधि को भविष्य से अभीष्ट परिणाम से जोड़ सके। NCF 2005 के अनुसार शिक्षा बाल केन्द्रित होनी चाहिए, जिसमें उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता दी जाए। इसलिए शिक्षा की योजना ऐसी हो कि वह विशेषताओं व जरूरतों की विशाल विविधता के तहत् भौतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक प्राथमिकताओं को संशोधित करे।

द्वितीय अध्याय में रचनावाद उपागम से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकना किया गया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि रचनावाद उपागम कक्षा 6 तथा ऊपर की कक्षाओं के लिए प्रभावशाली है।

अतः कक्षा 6 के लिए हिन्दी विषय में प्रभाविकता जानने हेतु प्रस्तुत शोध किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि, न्यादर्श, चरों, प्रयुक्त उपकरणों, डाटा संकलन का विस्तृत वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया, जिसके लिए माध्य, Mean, Percentile, Standard Deviation, ANCOVA का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि हिन्दी सन्दर्भ में रचनावाद उपागम प्रभावशाली है।

पंचम अध्याय में सारांश प्रस्तुत किया गया है, जिसमें शोध चर, प्रतिदर्श, अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाऐं एवं निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, भावी शोध हेतु सुझाव तथा निष्कर्ष दिया गया है।

5.1.0 निष्कर्ष –

रचनावाद उपागम की प्रमापिकता का अध्ययन करने हेतु किए गए शोध से प्राप्त निष्कर्षों को बिन्दुओं में स्पष्ट किया गया है।

5.1.1 रचनावाद, उपागम की प्रभाविकता का अध्ययन –

रचनावाद उपागम की प्रभाविकता का अध्ययन करने के लिए कक्षा का वातावरण खुला रखा गया, शिक्षा विद्यार्थी केन्द्रित थी। कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक था। विद्यार्थियों को कक्षा में विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता थी। प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा में विशेष माना गया। विद्यार्थियों को कक्षा में पूर्व अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अधिगम रिलेशनशिप शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए महत्वपूर्ण थी। सभी विद्यार्थियों को सक्रिय करने के लिए अभिप्रेरित किया गया, जिससे कि हिन्दी उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया भी जानी, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्रतिक्रिया से ज्ञात हुआ कि इस उपागम द्वारा सीखने में उन्हें कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई।

5.2.0 शोध अभिकल्प –

शोध के लिए प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्री–टेस्ट, पोस्ट–टैस्ट, कन्ट्रोल ग्रुप डिज़ाइन का प्रयोग किया गया है।

शोध चर – "चर वह गुण है, जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते हैं।"

स्वतंत्र चर – शिक्षण विधि – रचनावाद उपागम

आश्रित चर – विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि

5.3.0 प्रतिदर्श –

प्रतिदर्श चयन हेतु Random Sampling Technique का प्रयोग किया गया। जिसके लिए सर्वप्रथम गुजरात के गाँधीनगर के स्कूल की एक लिस्ट बनाई गई। जिसमें से लॉटरी के द्वारा प्रेरणा विद्यालय प्राप्त हुआ। प्रेरणा विद्यालय के कक्षा छठवीं के दो कक्षा की एक को लॉटरी के द्वारा प्रयोगात्मक ग्रुप एवं दूसरे को नियंत्रित समूह में रखा गया।

5.4.0 शोध उपकरण –

उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित

प्रतिक्रिया मापनी – स्वनिर्मित

लेसन प्लान – स्वनिर्मित

5.5.0 प्रयुक्त सांख्यिकी –

मध्यमान, प्रतिशतांक, प्रामाणिक विचलन, ANCOVA

5.6.0 अध्ययन के उद्देश्य –

रचनावाद उपागम की प्रभाविता का अध्ययन करना।

(अ) कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि के संदर्भ में।

(ब) कक्षा 6वीं की हिन्दी उपलब्धि पर उपागम की प्रतिक्रिया का अध्ययन।

5.7.0 अध्ययन की परिकल्पनाऐं एवं निष्कर्ष –

कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, जब हिन्दी उपलब्धि के पूर्व परीक्षण के अंकों को सहचर के रूप में लिया गया।

निष्कर्ष – कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि पर उपचार का सार्थक प्रभाव है।

5.8.0 शैक्षिक निहितार्थ –

शिक्षकों के लिए –

1. शिक्षकों के लिए रचनावाद उपागम हिन्दी शिक्षण में शिक्षकों की मदद करती है।
2. रचनावाद उपागम केवल हिन्दी शिक्षण में ही सहायक नहीं है, बल्कि विज्ञान, अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन आदि के शिक्षण में सहायता प्रदान करता है।

3. शिक्षण गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति रूचि उत्पन्न कर सकता है।

4. रचनावाद उपागम को शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयोग किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत शोध में लगाई गई लेखन रिपोर्ट शिक्षकों को शिक्षण कार्य में सहायक हो सकती हैं।

6. प्रस्तुत शोध में लगाई गई लेसन, रिपोर्ट को देखकर अन्य विषयों के शिक्षण में भी सहायता हो सकती है।

7. रचनावाद उपागम से विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में रूचि उत्पन्न की जा सकती है।

विद्यार्थियों के लिए –

1. रचनावाद उपागम से विद्यार्थियों के अनुभव को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे विद्यार्थी ज्यादा बेहतर सीख सकते हैं।

2. रचनावाद उपागम से रटन्त पद्धति से मुक्ति मिल सकती है।

3. रचनावाद उपागम से हिन्दी के संबंध में डर को कम किया जा सकता है।

4. रचनावाद उपागम से हिन्दी में गतिविधि आधारित, प्रोजेक्ट विधि, समूह गान, समूह चर्चा से विद्यार्थियों की रूचि बढ़ सकती है।

5. छात्रों को स्वतंत्र चिंतन का अवसर मिलता है।

अभिभावकों के लिए –

1. रचनावाद उपागम से अभिभावक बच्चों को दैनिक जीवन के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

2. रचनावाद उपागम से अभिभावक हिन्दी विषय के अतिरिक्त अन्य विषय के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

3. अभिभावक अपने बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।

5.9.0 भावी शोध हेतु सुझाव –

1. रचनावाद उपागम से कक्षा 6 हिन्दी विषय के अन्य अध्यायों पर शोध किया जा सकता है।
2. रचनावाद उपागम से हिन्दी विषय के अलावा गणित, अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन पर भी प्रभाव देखा जा सकता है।
3. शोध में अन्य चरों को लेकर रचनावाद उपागम के प्रभाव को देखा जा सकता है।
4. रचनावाद उपागम से कक्षा 6 के अलावा अन्य कक्षाओं पर शोध किया जा सकता है।
5. शोध में अन्य चरों को लेकर रचनावाद उपागम के प्रभाव को देखा जा सकता है।

5.10.0 शोध का परिसीमांकन –

1. यह शोध गुजरात राज्य के गाँधीनगर शहर के प्रेरणा विद्यालय में किया जाऐगा।
2. गाँधीनगर की प्राथमिक विद्यालय में से कक्षा 6वीं के हिन्दी विषय को चुना जाएगा।
3. रचनात्मक उपागम पर आधारित केवल दस पाठों द्वारा उपचार दिया जायेगा।

5.11.0 शोध अध्ययन का निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि रचनावाद उपागम से विद्यार्थियों की उपलब्धि–पारम्परिक विधि की तुलना में अधिक बढ़ती है।

अतः रचनावाद उपागम शिक्षण हेतु प्रभावशाली है।